IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 25, Issue 3, Series. 7 (March. 2020) 62-65
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

महाकवि कालिदास के प्रकल्पित जन्म स्थान की विश्लेषणात्मक समीक्षा

डॉ. निशा कुमारी एवम् डॉ. श्रीप्रकाश राय
संस्कृत विभाग,
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

प्रस्तावना :–

साहित्य में सत्यम्, शिवम् सुन्दरम् के गायक कविकुल गुरु विश्वविख्यात काव्य स्त्रष्टा महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव चेतना की साहित्यिक समृद्धि के एक मात्र प्रतिनिधि कवि हैं। महाकवि कालिदास रघुवंश महाकाव्य के द्वारा अपना आत्मभिव्यक्ति तो करता है, किन्तु आत्म प्रकाशन एवं आत्म विज्ञापन से दूर ही रहता है। अपनी लेखनी के द्वारा अनेक महान चरित्रों के व्यक्तित्व को रहस्य की पर्दों में छिपाए रखता है। कवि कुलगुरु कालिदास अपने जीवन का स्पष्ट परिचय न देते हुए उन्होने भारतीय मनीषियों की इस परिपाटी का अनुपद अनुसरण किया है। ठोस साक्ष्यों के अभाव में महाकवि कालिदास के जन्म स्थान जीवनवृत एवं काल निर्धारण आदि पक्षों को निर्विवाद प्रस्तुति असंभव है। इस सवंदर्भ में प्रायः समस्त पाश्चात्य तथा पौरस्त्य विद्वानों ने अपनी लेखनी उठाई है किन्तु महाकवि के जीवन का स्पष्ट आकलन आज भी विवादास्पद है। इसलिए महाकवि के जन्म स्थान पर शोध पत्र की प्रस्तुति समय की प्रमुख मांग है।

भूमिका :–

इस शोध पत्र में महाकवि कालिदास के जीवन वृत एवं जन्म स्थान का संक्षिप्त परिचय ही प्रस्तुत किया जाना उपादेय है। हलाँकि महाकवि कालिदास का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संस्कृतवाङ्मय का यह दूर्बल पक्ष रहा है कि उनका प्रामाणिक इतिहास आज भी अन्धकारमय है। कालिदास के जन्म स्थान के संदर्भ में प्रामाणिक सामग्री के अभाव के कारण कोई निर्णायक निष्कर्ष नहीं निकल पाया है। किसी भी व्यक्ति की सैद्धान्तिक मान्यता पर विचार करने से पूर्व उनके व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डालना औपचारिक आवश्यकता है। अतः कालिदास के जन्म स्थान की समस्या का निराकरण अनिवार्य है।

महाकवि कालिदास के जन्म स्थान से संबंधित प्रकल्पित मत

भारत भूमि का प्रत्येक प्रान्तीय कवि कुलगुरु कालिदास को अपने प्रान्त का निवासी मानने के उत्सुक दिखलाई पड़ता है। इसी आधार पर कुछ अन्तः तथा वाह्य साक्ष्यों के आधार पर प्रकाल्पित मत अग्रलिखित है।

(क) बंगवासी मत
(ख) कश्मीरवासी मत
(ग) विद्र्भवासी मत
(घ) विदिशावासी मत
(ङ) उज्जयिनीवासी मत

(क) बंगवासी मत μ

इस मान्यता की सम्पुष्टि हेतु कोलकाता में एक 'कालिदास संशोधन–समिति' समायोजित की गई है, जिसके तत्त्वाधान में प्रतिवर्ष आषाढ़ मास की प्रतिपादा को सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से 'कालिदासोत्सव' मनाया जाता है। उनके अनुसार कालिदास का जन्म स्थान मुर्शिदाबाद का गड्ढासिंगरु नामक गाँव है। इस सन्दर्भ में बैंाली संशोधकों ने अग्रलिखित तर्कों को प्रस्तुत किया है μ

1. नाम के साथ दास लगाने की प्रथा बैंाल में ही है तथा कालिदास के नाम के आगे 'दास' लगाना यह सिद्ध करता है कि वे बंगाली थे। काली देवी के पूजन की प्रथा बैंालियों में प्राप्त होती है।
2. मेघदूत में कालिदास ने 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे...' लिखा है।

यहाँ वे 'आषाढ़स्य प्रतिपत्तिथौ' भी लिख सकते थे किन्तु तिथि निर्देश के स्थान पर दिवस की संख्या गणना का निर्देश वस्तुतः बैंाली प्रणाली है। बैंाल में सौरमास की गणना प्रचलित है। अतः वहाँ चैत्र, वैशाख आदि मासों के दिन अंग्रेजी महिनों की दिवस गणना के अनुसार 29–31 तक परिगणित किये जाते हैं। साथ ही वहाँ मास के शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की मान्यता भी समुपलब्ध नहीं होती। मेघदूत के अन्तःसक्ष्य के अनुसार वे बैंदेशीय प्रतीत होते हैं।

समीक्षा :–

बंगालियों के यह मत तर्क की कसौटी पर सर्वथा विफल होता है। इस संदर्भ में अग्रलिखित आक्षेप किये गये हैं μ

महाकवि कालिदास की कृतियों में शिव की स्तुति पायी जाती है। इसके अतिरिक्त उनके काली भक्त होने का कोई सबल प्रमाण भी प्राप्त नहीं होता। कवि प्रणीत सातों रचनाओं में केवल कुमारसम्भव के सप्तम सर्ग में शिव–विवाह के प्रसैं में बारात के

दृश्य का वर्णन करते समय काली देवी का नामोल्लेख मात्र प्राप्त होता है और वह भी अनुचर परिवार के रूप में। अतः काली देवी की भक्ति के कारण 'कालिदास' नाम नहीं पड़ा। सम्भवतः यह नाम कालिदास के माता–पिता ने रखा होगा। उज्जयिनी में आज भी काली मन्दिर दिखाई पड़ते हैं। सम्भवतः इनके माता–पिता देवी काली के उपासक हो। अतः उन्होंने कालीदास नाम रखा हो। ऐसा आवश्यक नहीं कि माता–पिता, जिसकी उपासना करें सन्तान भी उसी का भक्त हो। तथा 'दास' लगाने की प्रथा का प्रचलन यदि बैंाल में ही माना जाए तो निश्चत रूप से कबीरदास, तुलसीदास तथा सूरदास को भी बैंाली ही मानना चाहिए।

"आषाढ़स्यप्रथमदिवसे" के आधार पर दिन और तिथि विषयक सूक्ष्म भेद प्रस्तुत करके कालिदास को बंगाली मानना उचित नहीं है क्योंकि 'आषाढ़स्यप्रथम दिवसे'– इस पदोच्चय से कवि का अभिप्राय केवल 'आषढ़ मास के प्रारम्भ में' ही था, अतः उनके द्वारा ऐसा प्रयोग किया जाना सर्वथा उचित था। 'आषाढ़मासस्य प्रतिपत्तियौ' ऐसा प्रयोग काव्यात्मक रसबोध में बाधक होने से सर्वथा अनुचित मान्य है। यहाँ ध्यातव्य है कि ईसवी सन् से पूर्व की तथा बाद की एक–दो शताब्दियों में महाराष्ट्र में सातवाहन, अत्रपो के तथा मथुरा के क्षत्रपों और कुषाणवंशीय कनिष्क आदि नरेशों के अभिलेखों में उत्कीर्ण कालगणना पद्धत्ति को देखकर ऐसा ज्ञात होता है कि उस समय तिथि गणना के साथ ही साथ दिवस गणना प्रणाली भी सुप्रचलित थी।

(ख) कश्मीरी मत μ

कतिपय वरिष्ठ विद्वानों ने विविध प्रमाणिक तर्कों के आधार पर कालिदास को कश्मीर का निवासी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है, जो अग्रलिखित है μ

1- कलीदास ने अपनी कृतियों में हिमाचल प्रदेश का अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से वर्णन किया है। 'कुमारसम्भव' महाकाव्य का प्रारम्भ ही हिमालय दर्शन से हुआ है। 'मेघदूत' में यक्ष की निवासस्थली अलकापुरी हिमालय पर ही अवस्थित है। 'विक्रमोर्वशीय' में पुरुरवा तथा उर्वशी का प्रथम मिलन कश्मीर के पास गन्धमादन पर्वत पर हुआ था। 'शाकुन्तल' में महर्षि कण्व तथा काश्यप मारीच के आश्रमस्थल हिमालय पर्वत पर ही थे। अतः कालिदास हिमालय प्रदेश के प्रति विशेष आकृष्ट दिखाई पड़ते थे। विद्वानों के अनुसार उपर्युक्त सभी स्थल कश्मीर के पास ही सिन्धु नदी घाटी में विद्यमान थे। सिन्धु तथा मालिनी नामक नदियाँ शची तीर्थ, सोमतीर्थ, ब्रह्मसर आदि तीर्थस्थल कश्मीर में ही विद्यमान थे। रघुवंश में वशिष्ठ की धेनु पर आक्रमण करने वाले सिंह का नाम 'कुम्भोदर' था। वह स्वयं को निकुम्भ का मित्र बताता है। कश्मीर के 'नीलमतपुराण' में कुबेर ने दैत्यों को निकालने हेतु 'निकुम्भ' को नियुक्त किया था अतः ज्ञात होता है कि कालिदास कश्मीर के प्राचीन आख्यानों से सम्बद्ध था।

2- रघुवंश में 'इन्दुमती स्वयंवर' के वर्णन प्रसैं में कालिदास से अज के गले में इन्दुमती से जयमाल न डलवा कर उसकी उपमाता सुनन्दा के हाथों वरमाला डलवाते हुए कश्मीर की विवाह विषयक लोकरीति का परिचय दिया है। कश्मीर में ही विवाह के अवसर पर सास अथवा कोई सौभाग्यवती स्त्री वर के गले में जयमाल पहनाती है, तदनन्तर ही वधू वर के कण्ठ में जयमाल डालती है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में धीवर के कुलधर्मानुकूल निन्द्य मत्स्यबन्धनवृत्ति का अभिनन्दपूर्वक समर्थन किया गया है। कश्मीर में भी कुलधर्म के फलस्वरूप हिंसा वृत्ति का समर्थन किया जाता है।

3- कालिदास प्रत्यभिज्ञा दर्शन (शैव दर्शन) के अनुयायी है और प्रत्यभिज्ञा दर्शन का उद्भव कश्मीर में हुआ था अतः कालिदास को कश्मीरवासी मानना सर्वथा उचित है। कालिदास ने अपने नाटकों में यत्र–तत्र विस्मरण तथा कालान्तरभावी प्रत्यभिज्ञान का वर्णन किया है। यथा μ 'मालविकाग्निमित्रम्' में मालविका एक वर्ष तक अज्ञातवास में रहती है तदनन्तर बिदिशा में आई हुई दासियों के द्वारा 'विद्र्भराजकन्या' के रूप में पहचान ली जाती है। इसी प्रकार 'विक्रमोर्वशीय' में उर्वशी कुमारवन में प्रवेश कर लता के रूप में बदल जाती है तथा सैंमनीय मणि के प्रभाव से पुनः पूर्वरूप को प्राप्त कर लेती है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में भी महर्षि दुर्वासा के शाप के प्रभाव दुष्यन्त शकुन्तला के पहले भूल जाता है तथा शाप निवृत्ति होने पर पूर्व स्मृति को प्राप्त करता है। इन सभी नाटकों पर प्रत्यनिज्ञा दर्शन का प्रभाव सुस्पष्ट है। अभिज्ञानशाकुन्तल में कालिदास ने शिव के लिए 'परिगतशक्तिः' विश्लेषण्पा पद का प्रयोग किया है। अतः कालिदास कश्मीर निवासी सिद्ध होते हैं।

4- 'मेघदूत' में अलकापुरी के वर्णन प्रसैं में कालिदास ने यक्षमुखेन मेघ को 'हरमुकुट' पर्वत पर प्रेषित करना चाहा है। हरमुकुट पर्वत की अधित्यका में विद्यमान 'मयग्राम' आधुनिक 'मणिग्राम' वस्तुतः अलकापुरी में विद्यमान यक्ष के गृह के चित्रण से साम्य रखता है। मेघदूत में जिन पुष्प–लताओं, नृत्य–गीत एवं सुरापान आदि का उल्लेख किया गया है, वह कश्मीर के वातावरण से साम्य रखता है।

5- कतिपय विद्वानों के अनुसार ईसा की छठी शताब्दी में हूणों के कश्मीर पर आक्रमण के फलस्वरूप कालिदास को अपनी पत्नी तथा जन्मभूति का त्याग करना पड़ा था तथा भटकते हुए उन्हें अपनी पत्नी तथा जन्मभूमि की याद सता रही थी फलतः मेघदूत में विरही रक्ष के माध्यम से उन्होंने अपने वियोग व्यथा का ही वर्णन किया है। यक्ष का निवास स्थान कश्मीर है, जो निश्चित रूप से कालिदास की जन्मभूमि होगी।

समीक्षा μ

1- कल्हण ने 'राजतरैंणी' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ में भामह, रूद्रट, कैयट, मम्मट आदि विद्वानों का नामोल्लेख तो किया किन्तु कालिदास की गणना इन कश्मीरीय विद्वानों में अन्वित न किए जाने से यह सिद्ध होता है कि कालिदास कश्मीरी नहीं है।

2- कश्मीर के स्वाभाविक वर्णन के आधार पर कालिदास को कश्मीरी नहीं माना जा सकता क्योंकि कालिदास ने निःसन्देश पूरे भारत का भ्रमण किया था अतः उन्हें भारतवर्ष के विविध प्रान्तों की लोक संस्कृति का ज्ञान था।

3- कश्मीरी लोक–प्रथाओं का ज्ञान भी कालिदास को कश्मीरी नहीं सिद्ध कर सकता है। मनुस्मृति आदि में वर्णधर्म के अनुकूल आचरण करने वाले की महत्ता पर बल देते हुए उन्हें आचरणीय कर्म के रूप में स्वीकार किया गया है अतः शास्त्रविज्ञ होने के कारण कालिदास ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में धीवर को उसकी निकृष्ट जीविकावृत्ति हेतु समाज से बहिष्कृत नहीं वर्णित किया है।

4- यद्यपि कालिदास के ग्रन्थों में भगवान् शिव के प्रति विशेष आस्था द्रष्टव्य है अतः वे शिवोपासक है तथापि उनकी दार्शनिक दृष्टि अद्वैततत्त्व में समाहित थी। कालान्तर में आचार्य शंकर ने जिस अद्वैततत्त्व को प्रस्थापित किया। कालिदास उसी मत के समर्थक थे। अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रयुक्त 'प्रत्यभिज्ञा' पद पहचान अर्थ में आया है, न कि 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' के अर्थ में। अतः कालिदास को कथमपि कश्मीर प्रत्यभिज्ञा दर्शन (शैव दर्शन) का अनुयायी सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

5- यदि कालिदास कश्मीरी होते तो कल्हण जैसा प्रतिभासम्पन्न इतिहासकार कालिदास की गणना कश्मीरी विद्वानों में करने से कदापि नहीं चूकता। यहाँ तक कि कल्हण ने कहीं भी कालिदास का नामोल्लेख नहीं किया।

6- छठी शताब्दी में हूणों के आक्रमण से कालिदास के पलायन तथा यक्ष के रूप में 'मेघदूत' में अपनी विरह व्यथा का वर्णन तथा सर्वथा असत्य ही प्रतीत होता है क्योंकि कालिदास का स्थितिकाल कथमपि छठी शताब्दी ईसवी नहीं सिद्ध हो पाता तो यह कल्पना नितान्त भ्रामक सिद्ध होती है।

(ग) **विदर्भ वासी मत :–**

महाकवि कालिदास ने अपनी कृतियों में 'विदर्भ' का वर्णन भी किया है। अतः कुछ विद्वान उन्हें विदर्भवासी सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। मेघदूत में रामगिरि पर्वत वर्तमान रामटेक, नागपुर के समीप विद्यमान है। 'रघुवंश महाकाव्य' में विदर्भ राजकन्या इन्दुमती का स्वयंवर एवं उसकी अकालमृत्यु का वर्णन प्रसैं काव्य के अत्यन्त मार्मिक स्थल के रूप में परिगणित किया जाता है। प×चम सर्ग में 'श्रद्धाविदर्भाधिपराजधानीम्' 'सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान्' आदि उक्तियाँ तत्कालीन विदर्भ राज की सुख–समृद्धि का सम्यग्प्रकाशन करती है। कालिदास की कृतियों में वैदर्भी रीति का निर्दशन करते हुए विद्वज्जनों इन शैली को समादरहि बनाया है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर लोग उन्हें विदर्भवासी सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं।

समीक्षा µ

यह मत नितान्त असत्य प्रतीत होता है क्योंकि कालिदास ने विदर्भ देश के किसी भी भाग के प्रति न तो अपना विशेष लगाव प्रदर्शित किया है और न विदर्भ देश का सुन्दर वर्णन किया है।

(घ) विदिशावासी मत µ

मेघदूत में विदिशा नगरी के वर्णन प्रसैं में कालिदास का जन्म स्थान 'विदिशा' स्वीकार किया गया है। मेघदूत में कालिदास ने विदिशा नामक नगरी को दशार्णदेश की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध बताया गया है तथा विदिशा के आस–पास विद्यमान अन्य छः स्थलों का वर्णन किया गया है। ये वर्णित स्थल 'नीचैगिरि' नामक पहाड़ तथा वन–नदी, निर्विन्ध्या सिन्धु, गन्धवती और गम्भीरा नामक प×व नदियाँ हैं। कालिदास के वर्णन प्रसैं से यह स्पष्ट होता है कि इस पर्वत और नदियों से उनका विशेष लगाव रहा होगा। अतः प्रो. परांजपे ने भी इन तर्कों के आधार पर कालिदास को विदिशावासी मानते हैं तथा महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने मन्दसौर में यशोधर्म देव का आश्रित स्वीकार करते हैं।

समीक्षा µ

यद्पि कालिदास ने 'विदिशा' और 'उज्जयिनी' के मध्य प्रवाहमान छोटी–छोटी नदियों तथा अन्य विविध स्थलों का परिचित भाव से वर्णन किया है किन्तु उन्होंने विदिशा के वर्णन को मात्र दो–तीन श्लोकों में ही समाप्त कर आगे मार्गदर्शन करना चाहा है। अतः विदिशा के प्रति उनके हृदय में मातृभूमि के भाँति ललक नहीं दृष्टिगोचर होती है अतः मेघदूत के इस अन्तःसाक्ष्य के अनुसार हम यह तो कह सकते हैं कि कालिदास ने विदिशा में कुछ दिनों तक निवास किया किन्तु कालिदास को विदिशा का मूल–निवासी नहीं माना जा सकता है।

(ङ) उज्जयिनीवासी मत µ

'मेघदूत' खण्डकाव्य में विदिशा नगरी के वर्णन के अनन्तर कालिदास ने यक्ष को जिस नगरी का मार्ग दिखलाया है, वह है उज्जयिनी रामटेक (मध्य प्रदेश) से कैलाश पर्वत (अलकापुरी) की ओर जाते हुए विदिशा और मन्दसौर आदि तो सम्भवतः मार्ग में ही पड़ते हैं, परन्तु कुछ दूर पश्चिम की ओर ही रहती है। अतः कालिदास काथअमुखेन मेघ से अनुरोध है कि उत्तरदिशा की ओर यदि उच्चावचमार्ग से भी जाना पड़े तो उसे उज्जयिनी के महलों पर निश्चित ही रुकने का प्रयत्न करना चाहिए। मेघ अलकापुरी को जाने हेतु रामगिरि (वर्तमान रामटेक) से उत्तरदिशा की ओर जा रहा है। विन्ध्याचल की ओर प्रवाहित होने वाली 'निविन्ध्या' नदी के पूर्व की ओर कुछ दूर पर 'उज्जयिनी' नामक नगरी विद्यमान है अतः अलकापुरी की ओर प्रस्थान करते हुए मेघ के लिए 'उज्जयिनी' होकर जाने से मार्ग टेढ़ा हो जाता है। 'मेघदूत' के इस वर्णन प्रसंग से स्पष्ट हो जाता है कि गन्तव्य तक जाने वाले सीधे मार्ग में उल्लेखनीय स्थलों, राज्यों में मेघ का क्षणिक विश्राम हेतु रुकना तो अनिवार्य ज्ञात होता है किन्तु सीधे मार्ग न जाकर कुछ दूर मार्ग

से हटकर पड़ने वाली 'उज्जयिनी' नगरी की ओर घूमकर जाने हेतु कवि कालिदास के अनुरोध का आशय यह प्रतीत होता है कि वह 'मेघ' का 'साभिप्राय' भेजना चाहता है। यहाँ कालिदास का उज्जयिनी के प्रति विशेष अनुराग प्रकट हो रहा है।

कालिदास ने मेघदूत ने न सिर्फ 'उज्जयिनी' का नामोल्लेख किया अपितु उज्जयिनी की अपार ऐश्वर्य सम्पदा, शिप्रा नदी की ओर से प्रवाहमान शीतल, मन्द सुगन्धित वायु, उज्जचिनी के स्थलों के सन्दर्भ में प्रचलित आख्यान (उदयन–कथा), उज्जयिनी का प्रसिद्ध महाकाल मन्दिर, सन्ध्याकालीन आरती के समय होने वाले वारौंनानृत्य आदि प्रसौं का सोत्साह हृदयानिराम चित्राङ्कन प्रस्तुत करते हैं। कालिदास उज्जयिनी नगरी के सौन्दर्य वैभव एवं सौभाग्य पर पूर्णतः विमुग्ध दिखाई पड़ते हैं। कालिदास ने उज्जयिनी को स्वर्ग के भूमिगत खण्ड के सदृश अनुपम निरुपित किया है। उज्जयिनी पूरी के प्रति इन समस्त भावपूर्ण वर्णनों के आधार पर कतिपय वरिष्ठ विद्वानों ने मालवा प्रदेश में विद्यमान उज्जयिनी नगरी को ही कालिदास की जन्म भूमि माना है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर हमें ज्ञात होता है कि यद्यपि कालिदास की जन्मस्थली 'उज्जयिनी' है किन्तु उनका सम्बन्ध समूचे मालव प्रदेश से रहा होगा। इसका प्रमाण हमें मेघदूत के अन्तः साक्ष्य से मिलता है कि वे उज्जयिनी, विदिशा तथा उसके समीप अवस्थित नदी, पर्वत तथा अन्य विविध स्थलों से भी सम्यग्रुपेण परिचित थे अतः इन स्थलों का वर्णन में नितान्त नैसर्गिकता द्रष्टव्य है। यह तथ्य यहाँ अवधेय है कि 'मालविकाग्निमित्र' तथा 'मेघदूत' खण्डकाव्य में समुपलब्ध अन्तःसाक्ष्य के अनुसार यह तो निश्चित है कि अपने जीवन के युवाकाल में वे अग्निमित्र शुँ के राजदरबार में निःसन्देश सम्बद्ध थे। अतः विदिशा नगरी की 'प्रथितता' का वर्णन देखकर कुछ आश्चर्य नहीं होता।

इस प्रकार मेघदूत के इस साक्ष्य के आधार पर कालिदास मालव देश की 'विदिशा' और 'उज्जयिनी' μ इन दोनों नगरियों से ही सम्बद्ध ज्ञान होते हैं। निःसन्देह कालिदास की उत्पत्ति–स्थली तथा क्रीड़ा स्थली उज्जयिनी ही थी तथापि उन्होंने अपने जीवन की चरमावस्था (वृद्धावस्था) उज्जयिनी नरेश शकारि विक्रमादित्य के राजदरबार में व्यतीत की। किन्तु अन्तःसाक्ष्य के प्रबल प्रामाण्य पर सिद्ध इस सत्य को कोई नहीं नकार सकता कि अपने जीवन का कुछ समय उन्होंने विदिशा के शासक अग्निमित्र के आश्रय में व्यतीत किया होगा।

संदर्भ सूची :–

1- एम कृष्णाचारी : क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर पृष्ट – 116–118
2- थ्मराशी कृत कालिदास प्र. 53–57
3- अभिज्ञान शाकुन्तलम – 7/22, 7/35
4- मेघदूत – 1/2, 1/28, 1/30
5- रघुवंश – 2/35, 3/86ए 5/41, 5/60
6- कुमार संभवम् – 7/39
7- इपि. इण्डि. वाल्युम – 8 पृष्ट–59